

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—सम्ब ३—स्प-सम्ब (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

वाधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

202] No. 202] मई दिक्ली, शनिवार, मई 24, 1986/जोव्ठ 3 1908

NEW DELHI, SATURDAY, MAY 24, 1986/JYAISTHA 3, 1908

इस भाग में भिन्न पृब्ध संस्था दो काली है जिससे कि यह बलग सकलन के रूप में रखा जा सके

Separate Paging is given to this fart in order that it may be filed as a separate compilation

तित मंत्रालय (ग्राधिक कार्य विभाग) (वेंकिंग प्रभाग) नई दिल्ली, 24 गई, 1986

ग्रधिस्चना

का. श्रा. 297(ग्र)...-केन्द्रीय सरकार, बैंककारी बिनियमन श्रीविनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त बिलियों का प्रयोग करते हुए, उस घारा की उपधारा (1) के ग्रधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए ग्रावेदन पर विवार करने के पश्चात् हिन्दुस्तान कर्माध्रयल बैंक लिमिटेड, कानपुर की बाबत 24 मई, 1986 को कारबार की समाप्ति से तारीख 25 सितम्बर, 1986 तक जिसके प्रतगत यह तारीख भी है, की कालाविव के लिए स्यगन भावेज करती है और अविस्थान की कालाविव के वीरान उस विककारी कम्पनी के विचद सभी कार्रवाइया ग्रीर कार्यवाहियों के प्रारम्भ करने या चालू रखने को इस शर्त के ग्रधीन रहते हुए स्थिति करती है कि ऐसे स्थगन से जक्त ग्रविनियम की धारा 35 की उपधारा (4) के खण्ड (ख) के श्रवीन केन्द्रीय सरकार द्वारा उसकी शक्तियों के प्रयोग कर या उक्त ग्रिविनयम की धारा 38 के ग्रधीन भारतीय रिचर्व बैंक द्वारा उसकी शक्तियों के श्रवोग पर ग्रातिकृत प्रभाव नहीं पढ़ेगा।

- २ भेन्द्रीय सरकार यह भी निषेश देती है कि हिन्दुस्तान कर्मीश्रवक्र बैंक लिमिटेड, कानपुर को मंजूर की गयी ग्रधिस्थगन की कालाबिड के दौरान, वह बैंक भारतीय रिजर्य बैंक की लिखित अनुआ के दिनी,—
 - (क) अपने वायित्वों और वाध्यताओं के निर्वहन में वा अव्यक्त कोई उद्यार या अप्रिम नहीं देगा, कोई दायित्व उपनत नहीं करेगा, कोई विनिद्यान नहीं करेगा या किसी संदाय के शिल् करार या उसका संवितरण नहीं करेगा या इसमें इसके पश्चाब उपवंधित विस्तार और रीति के सिवाए कोई बमझीता की उहराद नहीं करेगा :---
 - (1) प्रत्येक यचत वैंक या वाल् द्यांते में या किसी श्रव्य निर्ताण में बाहे वह किसी भी नाम से ज्ञात हों, कुल भ्रतिकोष के 50 प्रतिकात से भ्रतिक राजि परन्यु वह तब जब कि किसी एक व्यक्ति के नाम में (श्रीर किसी प्रत्य व्यक्ति के साथ संयुक्त रूप में नहीं) जमा खाड़े की वावत संदत्त रकम की कुल धनराजि व्यक्तियों के मामले में 10,000 रुपए तथा संस्थामों के मामलें में 25,000 - रुपये से अधिक नहीं है, परन्तु यह श्रीर कि ऐसी कोई रकम ऐसे किसी निम्नेपकर्सा/संस्था को जो किसी भी रूप में बैंक का ऋगी है, संदत्त नहीं की जाएगी;

- (2) उनन कैंक हारा जारी किए गए कोई डावा या सदाय द्वादेशों की नोई रक्स मीर जा उस तारीफ को नियका को रक्त स्रोग जो उन नारीफ को जिन्दों स्रोबस्थान निरू े ग के वरस्वत रहानी है,
- (६) ताोब 24 नरे 1936 को प्राउपने (व साग र क्रिय न प्रोरण स्वक्ते पर्य, को प्राउपने अवसा वस्त्र क्रिया किस की प्राप्त,
- (1) का िला ० प्र भा उत्त कैह हारा रा उपने । बरड़ ५ त किए एए रिनी प्राय या अभान ने सबप न या कैट द्वारा समित्रान डिटी के सबा ने पा उमका देश तिसी रुक्त को बस्ता करने के तिर आवश्यक क्ष्म से उपनि शिया जाता है परन्तु यदि ऐस प्रवेक बाद पा प्रमीत या िं। या कार्यवाही की बावत न्यय 2500 रुपने से समित है तो भारतीय रजवें विक की तिखित प्रमुता इसके उपनत किए जाने से पूर्व प्रभिन्नाटन की जाएगी, और है
- (5) किस अन्य मद पर कीई अन्य व्यय जहा तक वह बैककारी कम्पनी के दिन प्रतिदिन के प्रशासन का सवालव करने के लिए बैककारी कम्पनी की राय मे आवश्यक है परन्तु जड़ा किसी मद पर कुन व्यय, अविस्थान के आदेश के पूर्व छड़ कैनेडर मास के दौरान उप मद के मद्धे औपन मासिक व्यय से अधिक है या जहा उक्त अविव ने दौरान उस मद के मद्धे कोई व्यय उपगत नहीं हुआ है, और ऐने में मद्दी पर व्यय 2500 रुपये से अविक है वहा भारतीय रिज़र्व बैक की निखिन अनुना अतिरिक्त व्यय उपगत किए जाने के पूर्व अभि-प्राप्त की जाएगी,
- (ख) तारीख 24 मई 1986 का कारबार की समान्ति से पूर्व उसके द्वारा किए गए करार के श्रनुसरण के सिवाए, श्रन्नो स्थावर मन्नित का विकथ, श्रतरण या उसका श्रन्यथा व्ययन नहीं करेगा।
- 3 फेन्द्रीय मरकार यह भी निर्देश देती है कि हिर्दुस्तान कर्माश्रयत्र बैंक लिमिटेड, कान्तुर उन्ने मन् की गयी स्थान की कालाविश्व ने निम्नलिखित और सदाय, अर्थात् हिन्दुस्तान कर्माश्रयत्र बैंग लिमिटेड कान्तुर को भारतीय रिजर्व बैंक या भारतीय स्टेट वैंक या इसके किसी ममनुषणी वा किसी अन्य वैंक हारा हिन्दुस्तान कर्माश्रयल बैंक लिमिटेड, कान्तुर को मरकारी प्रतिभृतियो या अन्य प्रतिभृतियो के विरुद्ध उद्यारा/प्रश्निमों के या दिए गए प्रतिदाय के लिए आवश्यक है, और जो उस तारीख को जिसको अविस्थान आदेश प्रवृत्त होता है, असदत है अतिरिक्त सदाय कर सकता है।
- 4 केन्द्रीय सरकार यह और निर्देश देती है कि अधिस्थान की काता-बिंब के दौरान हिन्दुस्तान कर्माश्वर बैंक िशिनटड, कानगुर पूर्वीक सदाय करने के प्रयोजन के तिर भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अन्य बैंक के पास अनता खाना चनाते के तिर अनुज्ञान हाति, परन्तु द्वा नादेश की किसी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जण्गा कि वर भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अन्य पूराक बक रा अनता यह समाधान करने की प्रोक्षा करती है कि इस अरिण द्वारा अनिराधित गर्मों का निन्दुस्तान कर्माग्रयन बैंक लिमिटेड, कानगुर के पत्न से काई रक्तम जारी किए जाने के पूर्व पालन किया जा रहा है।
- ' 5 केन्द्रीय सरकार यह और निर्देश देनी है कि हिन्दुस्तान कर्माश्रपन बैंक लिमिटेड, कानपुर अधिस्थगन की कालावधि के दौरान, ऐसे किन्हीं बिलो को, जिनकी बसूली नही हुई है, उसको प्राप्त करने के लिए हकदार व्यक्ति को उस व्यक्ति द्वारा इस निमित्त किए गए अनुरोध पर उस दशा में वापस लौटा सकेगा यदि बैंक का ऐसे बिलो में कोई अधिकार या हक या हित नहीं है।

- 6 कन्द्रोग सरकार यह भो निर्देग दती है कि हिन्दुस्तान कर्माश्यक बैंक, लिग्टि कानपुर एस माल या प्रतिश्रृणि की निम्नलिखित रीति में ग्री मिगर तक निर्मृत्त या परिदन वर रोतेगा वा किसी उधार, नकद प्रत्यय या आवर हाट के लिए इसके पास गिरवी रखा गया हो, ग्राड-मानित, विनगरित व दाक रा पत्या प्रभारित विग्रास गया हा,—
 - ा। विभेषमा प्रश्नम । जन प्रश्नित उद्यार लेने वाते प्राप्त रहेन रहे हा गयी रक्तों के सद्धे पूर्ण स्प्राचैक इत्सा निस्त प्रत्न कर रिया गया ह, प्रत्न
 - (_) र्रिश दशा भे, पनुत्रात अनुगता या ऐसे अनुपानो ज जो अिन्याम अदिश क प्राृत्त होत से पूर्व रखे भा ४ इन दाना में से जा उच्चतर हो, नीचे उन्त भाव था प्रतिभृतियों पर सीमाओं के अनुपात को कम निए बिना ऐसी माला तक जो आवश्यव या सभव हो।

[फाइल न 17/2/86-बी म्रो-III) णरद केलकर, भ्रपर सचिव.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)
(Banking Division)
New Delhi, the 24th May, 1986
NOTIFICATION

- S.O. 297(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949, (10 of 1949), the Central Government, after considering an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of that Section, hereby makes an order of moratorium in respect of the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur for the period from the close of business on the 24th May, 1986 and upto and inclusive of the 25th September, 1986 and hereby stays the commencement or continuance of all actions and proceedings against that banking company during the period of moratorium, subject to the condition that such stay shall not in any manner prejudice the exercise by the Central Government of its powers under clause (b) of sub-section (4) of Section 35 of the said Act or the exercise by the Reserve Bank of India of its power under Section 38 of the said Act.
- 2. The Central Government hereby also directs that, during the period of moratorium gianted to it, the Hindustan Commercial Bank Ld, Kanpur shall not, without the permission in writing of the Reserve Bank of India.
- (a) Grant any loan or advance, incur any liability, make any investment or agree to or disburse any payment, whether in discharge of its liabilities and obligations or otherwise, or enter into any compromise or arrangement, except to the extent and in the manner provided hereunder:
 - (i) a sum not exceeding 50 per cent of the total balance in every savings bank or current account or in any other deposit by whatever name called, provided that the sum total of the amounts paid in respect of the accounts standing in the name of any



्र असाधार्ग EXTRAORDINARY

भाग II—वण्ड ३—वण-वण्ड (ii) PART II—Section 3—Sub-section (ii)

वाधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

#• 202] No. 202] मई दिल्ली, शनिवार, मई 24, 1986/चरेव्ठ 3, 1908

NEW DELHI, SATURDAY, MAY 24, 1986/JYAISTHA 3, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संस्था को बाती है जिससे कि यह जलग संकलन के क्य में रखा जा सके

Separate Paging is given to this fart in order that it may be filed as a separate compilation

तित मंत्रालय (श्राधिक कार्य विभाग) (बैंकिय प्रभाग) नई दिल्ली, 24 मई, 1986

प्रधिसुचना

का. आ. 297(अ)...-केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (2) हारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, चस धारा की उपधारा (1) के प्रधीन भारतीय रिजर्व बैंक हारा किए गए धावेदन पर विवार करने के पश्चात् हिन्दुस्तान कर्माध्यल बैंक लिमिटेड, कानपुर की बांदत 24 मई, 1986 को कारवार की समाप्ति से तारीख 25 सितम्बर, 1986 कक जिसके धंतर्गत यह तारीख भी है, की कालाविव के लिए स्यगन भावेज करती है और प्रजित्यगन की कालाविध के दौरान उस वैंककारी कम्पनी के विषद्ध सभी कार्रवाइयां और कार्यवाहियों के प्रारम्भ करने या चालू रखने को इस शर्त के प्रधीन रहते हुए स्थगित करती है कि ऐसे स्थगन से जनत अधिनियम की धारा 35 की उपधारा (4) के खण्ड (ख) के प्रधीन केन्द्रीय सरकार हारा उसकी शक्तियों के प्रयोग कर या उक्त प्रधिनियम की धारा 38 के प्रधीन भारतीय रिजर्व वैंक हारा उसकी शक्तियों के प्रयोग कर या उक्त प्रधिनियम की धारा 38 के प्रधीन भारतीय रिजर्व वैंक हारा उसकी शक्तियों के प्रयोग कर या उक्त प्रधिनियम की धारा 38 के प्रधीन भारतीय रिजर्व वैंक हारा उसकी शक्तियों के प्रयोग पर प्रतिकृत प्रभाव नहीं पढ़ेगा।

- केन्द्रीय सरकार यह भी निवेश देती है कि हिन्दुस्तान कर्माश्वक वैंक लिमिटेब, कानपुर को मंजूर की गयी प्रधिस्थान की कालाबिब के दौरान, वह बैंक भारतीय रिजर्य बेंक की लिखित अनुता के बिनी,—
 - (क) अपने दायित्वों श्रीर बाध्यताओं के निर्वहन में वा अण्यका कोई उद्यार या अप्रिम नहीं देगा, कोई दायित्व उपनत नहीं करेगा या किसी संदाय के तिल् करार या जसका संवितरण नहीं करेगा या इसमें इसके पश्चाह उपवंधित विस्तार और रीति के सिवाए कोई समझौता का ठहराद नहीं करेगा:---
 - (1) प्रत्येक बचत बैंक या जास खाते में या किसी अध्य निक्षेप में जाहे वह किसी भी नाम से ज्ञात हों, जुल भित्रेष के 50 प्रतिशत से भनिक राजि परन्तु वह तब जब कि किसी एक व्यक्ति के नाम में (और किसी प्रत्य व्यक्ति के साथ संयुक्त रूप में नहीं) जमा जाते की बावत संदत्त रकम की कुल धनराजि व्यक्तिमों के मामले में 10,000 रुपए तथा संस्थामों के मामले में 25,000- रुपये से अधिक नहीं है, परन्तु यह और कि ऐसी कोई रकम ऐसे किसी निक्षेपकर्ता/संस्था को जो किसी भी रूप में बैंक का ऋणी है, संदत्त नहीं की जाएगी;

- (2) उनन बैंक हारा जारी किए गए कोई डाक्य या सदाय ग्रादेशों की होई रकम श्रीर जो उस तारीख का जिसकों कोई रक्त ग्रोर जो उन गारीय सो जिसकों श्रीप्रस्थान स्थान नेस के प्रस्वत कर जाती है,
- (3) तो इ. 24 मिर 1946 हो बाउना में सरणा े सिर्फल प्रोर रा । जिले पूर्व, को बाउनके उपवा सुन पिछा १९ किस बी सार,
- (4) नार्ट ेश व य जा स्त दैत हरा ता उसके दिशा शाउन किए रेग तिसी बाद या अनीत के सबग्र से या दैत गरा अभिषादा दिनी ने स्वा भे या उसको देव क्ति रकम को बस्त करने ता लिए आवश्यक का से उपना विया जाना है परनु यदि ऐने प्रापेत बाद या अपील या जिती या कार्यवाही की बावन व्यय 2500 रुपने से अभिक है तो भारतीय रिजां मैंक की तिखित अनुता इसके उपनत किए जाने से पूर्व अभिप्राप्त की जाएगी, और मैं
- (5) किसी अन्य मद पर कोई अन्य व्यय जहा तक वह बैककारी कम्पनी के दित प्रतिदिन के प्रमासन का सवालन करने के लिए बैककारी कम्पनी की राय मे आवश्यक है परन्तु जरा किसी मद पर कुन व्यय, प्रविस्थान के ग्रादेश के पूर्व छह कैनेडर माम के दौरान उम मद के मद्धे ग्रीपन मासिक व्यय से ग्राविक है या जहा उक्त ग्रविव के दौरान उप मद के मद्धे कोई व्यय उपगत नहीं हुन्ना है, ग्रीर ऐने मे मद्दे पर व्यय 2500 रुपये से ग्रविक है वहा भारतीय रिज़र्व बैक की निखिन भनुज्ञा ग्रतिरिक्त व्यय उपगत किए जाने के पूर्व ग्रभि-
- (ख) तारीख 24 मई, 1986 को कारबार की समान्ति से पूर्व उसके द्वारा किए गए करार के भ्रतुमरण के सिवाए, भ्रपनी स्थावर सम्पत्ति का विकय, भ्रतरण या उसका भ्रत्यथा व्ययन नहीं करेगा।
- 3 केन्द्रीय सरकार यह भी निर्देश देती है कि डिग्डुस्तान कर्माशयल बैंक लिभिटेड, कानपुर उप्ते भज्र की गयो स्थान की कालाविध "त निम्नलिखित और सदाय, अर्थात् हिन्दु, तान कर्माश्यन बैंक लिभिटेड कानपुर को आरतीय रिजर्य बैंक या भारतीय स्टेट बैंक या इसके किसी ममनुषगी वा किसी अन्य तैंक द्वारा निन्दु, कानपुर को मरकारी येनिज्ञियो या अन्य प्रतिभृतियो के विषद्ध उधारो/प्रिप्रमों के या दिए गए प्रतिदाय के लिए आवश्यक है, और जो उस तारीख को जिसको अधिस्थमन आदेश प्रवन्त होता है, असदन है प्रतिरिक्त सदाय कर सकता है।
- 4 केन्द्रीय सरकार, यह स्रीर निर्देश देती है कि स्रक्षित्यान की काना-बिध के दौरान हिन्दुम्नान कर्माणयन बैक निर्मिटेड, जानपुर पूर्वोक्त सदाय करने के पयोजन के निर् भारतीय रिजर्व बैक या किसी सन्य बैक के पास स्थाना खाता चनाने के निर् स्थनतान हाती, परन्तु इस पादेश की किसी बात का यह धर्म निर्मा लगाया जाएगा कि वर भारतीय रिजर्व बैक या किमी सन्य पूर्वोक्त बैक से प्रमान यह समावान करने की स्रवेक्षा करती है कि इस स्वादेश हारा स्वियोगित गर्मी का हिन्दुस्तान कर्मास्थन बैंक लिमिटेड, कानपुर के पत्र में कोई रकम जारी किए जाने के पूर्व पालन किया जा रहा है।
- 5. केन्द्रीय सरकार यह श्रौर निर्देश देती है कि हिन्दुस्तान कर्माश्रपन कि लिमिटेड, कानपुर ग्रिधिस्थगन की कालावधि के दौरान, ऐसे किन्हीं बिलों को, जिनकी वसूली नहीं हुई हैं, उसको प्राप्त करने के लिए हकदार ध्यक्ति को उस व्यक्ति द्वारा इस निमित्त किए गए मनुरोध पर उस दशा में वापस लौटा सकेगा यदि बैंक का ऐसे बिलो में कोई ग्रिधिकार या हक या हित नहीं है।

- 6 केन्द्री। सरनार यह भी तिर्देश बती है कि हिन्दुस्तान कर्माशयन बैंक, लिग्टिं कानपुर एसे माल या प्रतिशृश्यों की निम्नलिखित रीति में प्रांतिस्तार तक तिर्मक्त या परिदक्त कर स्केगा का किसी उधार, नकद प्रत्यय पा अध्वर कृतट के लिए इसके पास रिर्टी रखा गया हो, ब्राड-मानित विकासित का बद्धा या न्या पर्मार्ग विवास हो, --
 - (1) िंगी दण मा साम प्रशन्तित, उधार लेने बाते राज्य राता लारा त्या पशी रूपमों के सक्के पूर्ण स्वर बैंक शारा निर्मात प्रप्त पर निया गया ह,
 - () रिर्म ३० दणा मे, यनुप्तित धनुप्तता था ऐसे प्रनुपातो त जो अित्मथणन आदण के प्रयुत्त हान से पूर्व रखे गण व इन दोना में से जा उच्चतर हो, नीचे उक्त ाल वा प्रतिभृतियो पर सीमाओं के अनुपात को कम क्रिए बिसा ऐसी माला तक जो श्रावण्यक या सभव हो।

[फाइल न 17/2/86-बी म्रो-III) गरद केलकर, श्रपर सचिव,

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)
(Banking Division)

New Delhi, the 24th May, 1986

NOTIFICATION

- S.O. 297(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949, (10 of 1949), the Central Government, after considering an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of that Section, hereby makes an order of moratorium in respect of the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur for the period from the close of business on the 24th May, 1986 and upto and inclusive of the 25th September, 1986 and hereby stays the commencement or continuance of all actions and proceedings against that banking company during the period of moratorium, subject to the condition that such stay shall not in any manner prejudice the exercise by the Central Government of its powers under clause (b) of sub-section (4) of Section 35 of the said Act or the exercise by the Reserve Bank of India of its power under Section 38 of the said Act.
- 2. The Central Government hereby also directs that, during the period of moratorium gianted to it, the Hindustan Commercial Bank Ld, Kanpur shall not, without the permission in writing of the Reserve Bank of India.
- (a) Grant any loan or advance, incur any liability, make any investment or agree to or disburse any payment, whether in discharge of its liabilities and obligations or otherwise, or enter into any compromise or arrangement, except to the extent and in the manner provided hereunder:
 - (i) a sum not exceeding 50 per cent of the total balance in every savings bank or current account or in any other deposit by whatever name called, provided that the sum total of the amounts paid in respect of the accounts standing in the name of any

one person (and not jointly with that of any other person) does not exceed Rs. 10,000 in the case of individuals and Rs. 25,000 in the case of Institutions and provided further that no amount shall be paid to any depositor institution who is indebted to the bank in any way;

- (ii) the amounts of any drafts or pay orders issued by the said bank and remaining unpaid on the date on which the order of moratorium comes into force;
- (iii) the amounts of the bills received for collection on or before the 24th May, 1986 and realised before, on or after that date;
- (iv) Any expenditure which has necessarily to be incurred in connection with any suits or appeals filed by or against or decrees obtained by the said bank or for realising any amounts due to it, provided that if the expenditure in respect of each such suit or appeal or decree or proceeding is in excess of Rs. 2500, the permission in writing of the Reserve Bank of India shall be obtained before it is incurred; and
- (v) any expenditure on any other item in so far as it is in the opinion of the banking company necessary for carrying on the day-to-day administration of the banking company, provided that where the total expenditure on any item in any calendar month exceeds the average monthly expenditure on account of that item during the six calendar months preceding the order of moratorium; or if no expenditure has been incurred on account of that item in the past exceeds a sum of Rs. 2500, the permission in writing of the Reserve Bank of India shall be obtained before the additional expenditure is incurred;
- (b) sell, transfer or otherwise dispose of any of its immovable properties except in pursuance of any agreement entered into by it prior to the close of business on the 24th May, 1986.
- 3. The Central Government hereby also directs that the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur may, during the period of moratorium granted to it,

- make the following further payments, namely, the amounts necessary for repaying loans or advances granted against Government securities or other securities, to the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur by the Reserve Bank of India or the State Bank of India or any of its subsidiaries or by any other bank and remaining unpaid on the date on which the order of moratorium comes into force.
- 4. The Central Government hereby further directs that during the period of moratorium the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur shall be permitted to operate its accounts with the Reserve Bank of India or with any other bank for the purposes of making the payments aforesaid, provided that nothing in this order shall be deemed to require the Reserve Bank of India or any other bank aforesaid to satisfy itself that the conditions imposed by this order are being observed before any amounts are released in favour of the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur.
- 5. The Central Government hereby further directs that the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur may, during the period of moratorium, return any bills which have remained unrealised to the persons entitled to receive them on a request being made in this behalf by such persons, if the bank has no right or title to, or interest in, such bills.
- 6. The Central Government hereby also directs that the Hindustan Commercial Bank Ltd., Kanpur may release or deliver goods or securities which may be pledged, hypothecated or mortgaged or otherwise charged to it against any loan, cash credit or overdraft:—
 - (i) in any case in which full payment towards all the amounts due from the borrower or borrowers, as the case may be, has been received by the bank, unconditionally; and
 - (ii) in any other case, to such an extent as may be necessary or possible, without reducing the proportions of the margins on the said goods or securities below the stipulated proportions or the proportions which were maintained before the ordre of moratorium came into force, whichever may be higher.

[F. No. 17|2|86-B.O.III₃ S. M. KELKAR, Addl. Secy.